Editorial

बुद्ध मार्ग दाता हैं, मुक्ति दाता नहीं !

"तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना।।" (धम्मपद, 276)

अर्थात् उद्योग (परिश्रम) तो तुम्हें ही करना पड़ेगा, तथागत तो केवल मार्ग आख्यात करते हैं। इस मार्ग पर आरूढ (चलकर) हो, दुखों (मार) के बन्धन से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

सम्यक संबुद्ध के उपरोक्त कथन आज के युग के लिये बिल्कुल सटीक सिद्ध होती हैं। जिससे सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय का कल्याण हो सकता हैं। धम्मपद के इस महा वाक्य को व्यावहारिक रूप से धारण करने मात्र से मानवजाति के लोकीय (भौतिक) और पारलोकीय जीवन का उत्तम रूप से मंगल हो सकता हैं। चूंकि, वर्तमान में वैश्विक जनमानस खासतौर पर युवा वर्ग विभिन्न प्रकार के समस्याओं से जूझ रहा है जैसे: बेरोजगारी, बेकारी, आर्थिक अव्यवस्था, मनो वांछित फल की प्राप्ति न होना, भुखमरी, हत्या, चोरी, अवैध व्यापार, हिंसा, व्याभिचार आदि। इन कार्यों के सिद्धि के लिए वह अनैतिक और गलत प्रकार के कार्यों के विधि को अपनाता हैं, करता हैं, अकर्मण्यवाद पर विश्वास करता हैं, भाग्यवाद को मानता है, किसी देवी-देवता या बाबा या गुरुओं के आशीर्वाद या कृपया पर निर्भर रहता हैं, किसी की कृपा हो जाएगी या कोई कर देगा, बाह्य कर्मकांड करता हैं, और करवाता है, अपने कार्यसिद्धि या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यज्ञ-हवन पूजन और पूजा पाठ करता हैं, इत्यादि अपने कर्म पर भरोसा ना कर अकर्मण्यवाद को भावित करता है जिससे परिणाम नकारात्मक और दुखी देने वाले ही होते हैं।

परंतु ठीक इसके विपरीत सम्यक संबुद्ध के उपरोक्त धम्मपद के कथन के अनुसार- "कर्म तो तुम्हें ही करना पड़ेगा, हाँ कोई गुरु भाई, बड़े बुजुर्ग, संत पुरुष, कुशल शिक्षक, मार्गदर्शक, कोच मैत्री चित्त से मार्ग बता सकते हैं, कि देख भाई मैं इन मार्गों पर चल कर अपने मंजिल को प्राप्त किया तो तू भी इस मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है अर्थात उस मार्ग या रास्ते पर खुद को ही काम करना होगा, कोई गुरु या कोच नहीं आएगा।" मैं कुछ उदाहरणों से और स्पष्ट करना चाहता हूँ, कि कोई प्रतियोगी परीक्षा के लिए कोई कुशल शिक्षक ने विद्यार्थी को लगातार एक साल से बेहतर रूप से प्रशिक्षित किया हैं, परंतु परीक्षा कक्ष में विद्यार्थी को लिखना होता हैं, न कि शिक्षक को। एक अन्य उदाहरण, एक कुशल खेल प्रशिक्षक कोच के रूप में खिलाड़ी को विगत चार सालों से ओलंपिक के लिये अच्छे से प्रशिक्षित कर तैयार किया परंतु खेल के मैदान में तो खिलाड़ी को ही प्रदर्शन करना होता हैं, न कि कोच को।

काम तो तुम्हें ही करना पड़ेगा, संत पुरुष तो रास्ता बताते हैं !

इसी संदर्भ में तथागत बुद्ध ने उनके साथ सहायक के रूप में आजीवन रहने वाले भिक्षु आनंद को कभी मुक्त नहीं करा सके, अर्हत पद प्राप्त नहीं करा सके, इस हेतु भिक्षु आनंद को

स्वयं ही अथक प्रयत्न करना पड़ा और अंततः अर्हत पद की प्राप्ति हुई। यहाँ नैतिक शिक्षा यह मिलती हैं, कि काम तो तुम्हें ही करना पड़ेगा, रास्ता कोई और बता सकता हैं। इस हेतु कोई और नहीं कर सकता ।

अत: बुद्ध ने आज से लगभग छब्बीस सौ वर्ष पूर्व अपने अथक परिश्रम से 'सम्यक सम्बोधि' को प्राप्त कर 'सम्यकसम्बुद्ध' के रूप में प्रसिद्ध हुये। तब उसके बाद बुद्ध ने अपने महान कारुणिक भाव से *"चरथ भिक्खवे चारिकं, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकनुकम्पाय"* अर्थात् "बहुत जनों के हित के लिए, बहुत जनों के सुख के लिए, लोक पर दया करने के लिए" लगातार पैंतालीस वर्षों तक असंख्य प्राणियों के दुखमुक्ति के लिए धम्मोपदेश किया, मार्गदर्शन किया। (विनयपिटक , महावग्ग, 32, मारकथा)

सम्यक संबुद्ध की यह कर्मवादी शिक्षा सम्पूर्ण मानवता के लिए अतीत में सुख-शांति प्रदान किया है, वर्तमान में कर रहा हैं, और भविष्य में करता रहेगा। क्योंकि यह ***एहिपस्सिको*** अर्थात "आओं और देखों" पर आधारित है। बुद्ध का यह कर्मवादी शिक्षा इतना वैज्ञानिक हैं, कि अभी आओं, देखों, चखो। यह विज्ञान की प्रयोगशाला की भांति है। तुरंत फलदायी हैं। जो कार्य-कारण सिद्धांत पर आधारित हैं। अतएव, बुद्ध की यह शिक्षा तभी प्रासंगिक तथा समीचीन होगी जब तक इसे व्यावहारिक रूप में अभ्यास न किया जाये। इस तरह बुद्ध के कर्मवादी शिक्षा को धारण करके, सम्पूर्ण दुखों को समाप्त कर, प्राणी अपने जीवन में चहुमुखी विकास कर, अपने जीवन को मंगलमय बना सकता हैं।

Guest Editorial
डॉ शिव प्रसाद पाँचे
सहायक प्रोफ़ेसर
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
Email: sppanche@gmail.com